चलें धर्म के पंथ

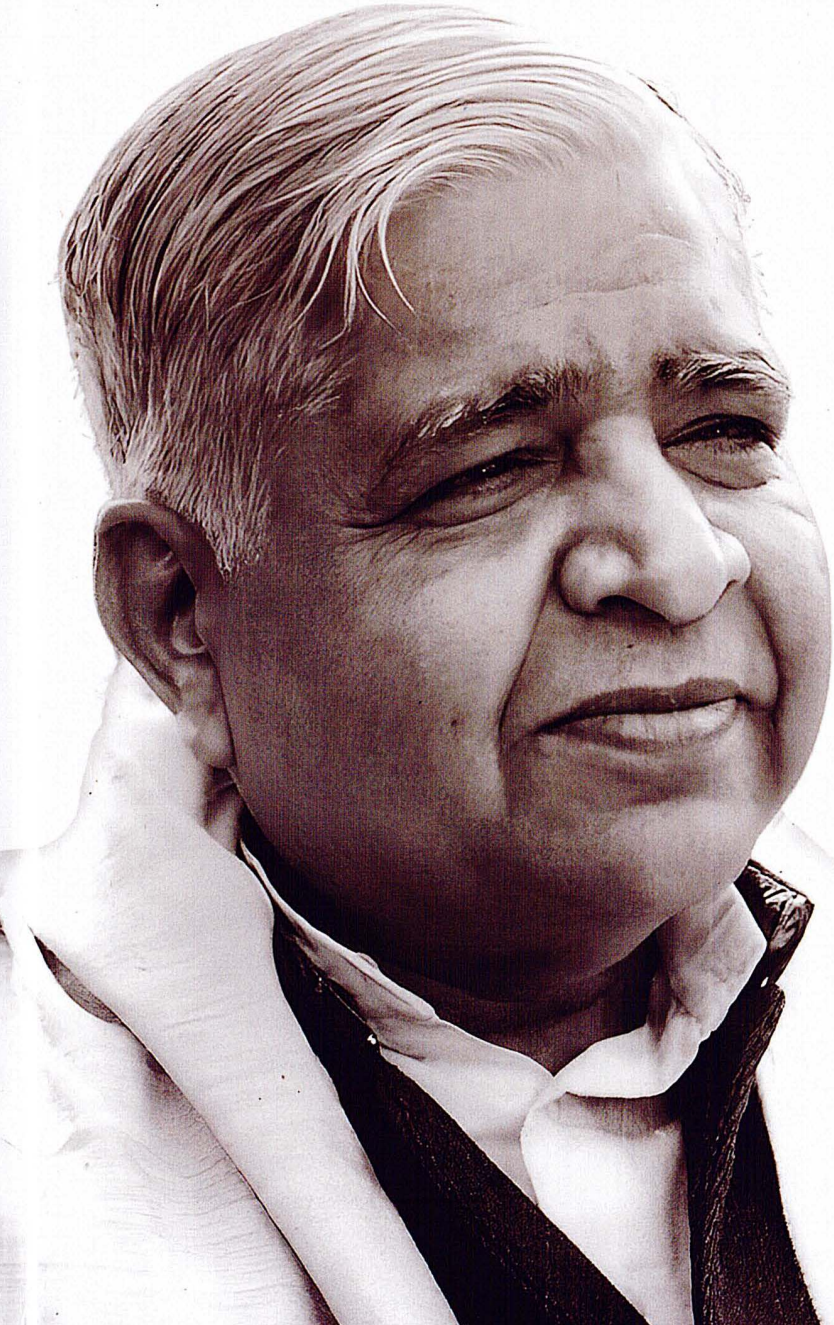

स.ना. गोयन्का

आत्मकथन
संकलन

जागो लोगो जगत के, बीती काली रात।
हुआ उजाला धरम का, मंगल हुआ प्रभात॥

चलें धर्म के पंथ

सत्यनारायण गोयन्का

(आत्मकथन संकलन)

विपश्यना विशोधन विन्यास

धम्मगिरि, इगतपुरी

H115 - चलें धर्म के पंथ
© विपश्यना विशोधन विन्यास
सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण: 2024

मूल्य : रु. 700/-

ISBN: 978-81-7414-470-6

प्रकाशक:
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422403
जिला- नाशिक, महाराष्ट्र
फोन: 02553-244998, 244076,
244086, 244144, 244440,
Email: vri_admin@vridhamma.org
Website: www.vridhamma.org

मुद्रक:
सुपर क्रिएटिव ग्राफिक सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड,
Email : info@supercgs.com
Website : www.supercgs.com
फोन: 022 40672000

इमे द्वे पुग्गला दुल्लभा लोकस्मि।
यो च पुब्बकारी,
यो च कतञ्ञू कतवेदी

संसार में ये दो प्राणी दुर्लभ हैं।
वह जो किसी का उपकार करने में पहल-करता है
वह जो कृतज्ञ एवं आभारी होता है।

विषय-सूची

संपादकीय टिप्पणियां 13

प्राक्कथन 14

धम्म भूमि में जीवन 15

मेरे दादाजी के साथ मौन में 17

बाबा की यादगार स्मृतियां! 18

घुमक्कड़ जीवन 23

महामुनि 24

कुछ यादगार घटनाएं 31

कृतज्ञता के बीज 31

प्रारंभिक काव्य प्रस्तुतियां 36

मेरे प्रथम शिक्षकों की देन 39

मैट्रिक की पढ़ाई 41

द्रवीभूत भक्ति 43

आर्य समाज और बुद्ध की शिक्षाओं पर विचार 44

भगवान बुद्ध ने भारत को दुर्बल बनाया 47

म्यंमा से भारत प्रवास 49

बीकानेर में एक काव्यात्मक हलचल 54

केरल की सुंदरता और जन्मभूमि म्यंमा की गोद 57

वाणिज्य और संस्कृति : मेरे प्रयास 58

नेहरूजी से भेंट 59

साहित्य-सृजन धर्मिता 61

पोषित परंपराएं और परेशान करने वाली खोजें 62

महलों से मंदिरों तक : राष्ट्र का पतन 67

जातिपांतिजनित दोष 73

एक कोचवान की खोज 73

उपनयन संस्कार की दुविधा 78

अतिशूद्र का उपनयन संस्कार 80

जाति-बहिष्कार का भय 81

छुआछूत की पराकाष्ठा 82
शत्रुता की उत्तेजना 83
कला से - छिः कला तक 85
गहरी जड़ों वाली असमानता 86
जाति के पार 91
वह तूफानी कविता 94

उपहासास्पद विडंबना 96
हिंदी का प्रचार-प्रसार 96
बुद्ध की प्रशंसा, उनके उपदेशों पर प्रश्न 101
ऐतिहासिक छट्ठ संगायन 103
तिपिटक की खोज 107
धर्म की शुद्धता को संघ ने कैसे संरक्षित किया 109
विपश्यना का पुनरुद्धार 110

मेरा भाग्योदय हुआ 111

जीवन प्रवर्तक मुलाकातः सयाजी ऊ बा खिन के साथ 113
दृढ़ संकल्प 118

मेरा भाग्य जागा 122
कालामसुत्त 122
तूफान और शांति 123
मैंने क्या अभ्यास किया? 128

विरासत की हानि 131
मिथकों को ख़त्म करना चाहिए 133

म्यंमा के स्वर्णिम अतीत की एक झांकी 134
भदन्त लैडी सयाडो 139
पांचवीं संगायन में प्रमुख भूमिका 141
उत्कृष्ट शैक्षिक कार्य 143
सया तैजी 144
"मृत्युहीन" की खोज करें 147
विपश्यना सिखाना 148
धम्म के मशाल-वाहक 149

सया तैजी के बारे में संस्मरण 153
कृषक आचार्य 153
आग से खेलना 154

सयाजी ऊ बा खिन : धर्म के चमकते सितारे 156
युद्ध तथा शांति काल में एक जैसा निष्ठापूर्ण मानव 162
धर्म ने एक सरकारी विभाग को बदल दिया 163
कमल से कोमल : कुलिश कठोर 166
असांप्रदायिक पथ के गुरु 169
सरलता और सद्गुणों का व्यक्ति 171
मेरे गुरु की असीम मैत्री 173
बुद्ध की मूर्ति 174

एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य के लिए तैयारी 175
कैसे चलें, कैसे खायें? 175
महान उत्तरदायित्व के लिए प्रशिक्षण 176
धारित धर्म की कड़ी परीक्षा 178
क्या आप अपने पुण्य का विभाजन करते हैं? 181
धर्म का बीज पूरी दुनिया में बोना है 182

विपश्यना का डंका बज चुका है 185

विपश्यना पुनः उदय होगी 186
अनिश्चितता के समय में धम्म का मार्गदर्शन 187
म्यंमा का ऋण चुकाना है 191
धर्म-रत्न भारत को वापस 199

सयाजी ऊ बा खिन और गोयन्काजी के बीच पत्राचार 200
सयाजी के पत्रों में से :- 200
भारत में बहुत महान और अपूर्व सेवा का काम कर रहे हो। 200
गोयन्काजी के पत्राचार 204
पहले शिविर का प्रतिवेदन सयाजी को 204
अस्वीकार और अंतिम समय में सहमति 209
उत्तर भारत में एक ऐतिहासिक धम्म शिविर 214
व्याख्या की स्पष्टता 215
अनागारिक धर्मपाल 217

विद्वानों के साथ 217
मुंबई से दिल्ली तक 219
चूरू, दिल्ली, लखनऊ की ऐतिहासिक धर्मचारिका 231
त्रिविध परिशुद्ध दान 244
सामाजिक अपेक्षाएं 249
अंधकार या प्रकाश 254
गाली दी, मारा मुझे, हाय लिया सब लूट 255
पुष्कर के समाचार 260
सहिष्णुता की कला 264
विविध समूह के लोग 266
मन को शुद्ध कैसे करें 272
मानो राजस्थान में हों 274
दुश्मनों को दोस्त में बदलना 279
बच्चों को धर्म सिखाने का काम 281
सयाजी के शरीर त्याग के बाद के पत्राचार 289
सयाजी ऊ बा खिन के अंतिम क्षण 292
पूज्य सयाजी के अंतिम दिनों का प्रतिसाद 299
विरासत की जिम्मेदारी 300
अनन्त ज्योति 303
भविष्य के साधक-साधिकाओं के लिए मार्गदर्शन 304
विपश्यना प्रसारण ही सच्चा स्मृति स्तंभ 305
सयाजी का सम्मान 306
वैश्विक धम्म की पुकार 308
चतुर्विपश्यना की प्रयोगशाला 313

माताजी के पत्र एवं सत्यनारायण गोयन्का जी के उद्बोधन 319
माताजी के कुछ पत्रांश 319
गोयन्का जी के कुछ पत्रांश 322
धर्म जागता रहे! 322
तुम्हारे द्वारा महिलाओं का कल्याण होगा 323
धर्म-चेतना जाग्रत रहे 324
धर्म सदैव रक्षा करेगा 325
तुम धर्मपुत्रियों का ध्यान रखोगी 326

हम एक-दूसरे को मजबूत बनाएंगे 327
धैर्य और साहस 329
ध्यान ही एकमात्र शरण बनता है 330
धर्म-बल 331
सबका कल्याण 332

विपस्सना-बांध के द्वार खुले 335

धम्म सबके लिए 337
सयाजी का निर्णय 337
सभी को सिखाने की छूट 340

विपश्यना का सार्वभौमिक आकर्षण 341
बांध खुल गया : अंग्रेजी में शिविर 341
धर्म का सार : धम्म की एकीकृत शक्ति 345
विपश्यना की गूंज 348
क्षणिकवाद 351

म्यंमा से विश्व तक 355
धम्म प्रसार में शुद्धतम सिद्धांतों का पालन करना 356
सत्य-क्रिया 359
मातृभूमि और धम्म कर्तव्य के बीच 365

भगवान बुद्ध ने कहीं 'बौद्ध' शब्द का प्रयोग नहीं किया 367
कृतज्ञताभरी मंगल कामनाएं 371

धम्म की यात्रा 373

म्यंमा का भिक्षुसंघ 375
समाज को भिक्षु संघ की सेवा 376
पू. महाथेर ऊ जनकाभिवंश और महापण्डित राहुल सांकृत्यायन 379
पूज्य महासी सयाडो 380
महाथेर वैबू सयाडो 382

धर्म की परिवर्तनशील शक्ति 388
विस्मयजनक प्रस्थान 388
भाई का अटूट संबंध 395
भाभी मां ने विपश्यना को अपनाया 402
महावीर महाराज 408
धन्य विमला! 413
अनुज राधेश्याम 419

विपश्यना विशोधन विन्यास 423
रत्नजटित स्वर्ण : परियत्ति के साथ पटिपत्ति 423
विपश्यना का व्यावहारिक विज्ञान 426
तिपिटक का डिजिटल संकलन 430

विपश्यना पगोडा क्यों? 434

बुद्ध के बारे में भ्रांतियों को दूर करने की घोषणा 441
करुणापूर्ण सद्भावना 441
पड़ोसी बुद्धानुयायी देशों के साथ मैत्री-संबंध 443
श्रद्धेय शंकराचार्यजी से वार्तालाप 446

विश्वशांति के लिए आंतरिक शांति आवश्यक 448

धम्म में एक जीवन-अवलोकन 452
धम्म का रत्न : सभी भौतिक खजानों के परे 452
धर्मदेश की कृतज्ञतापूर्ण तीर्थ-यात्रा 455
नये जीवन के चालीस वर्ष 461
सत्तर वर्ष पूरे हुए 467
जीवन और मृत्यु 468

श्री सत्यनारायण गोयन्का 471

विभिन्न मंचों पर सम्मान 478

श्री स. ना. गोयन्का द्वारा संचालित विपश्यना-शिविर 514

विपश्यना केंद्र 520

प्रकाशन 523

पालि शब्दावली 526